Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

किन्नरों की दयनीय दशा

डॉ. डोमन प्रसाद चन्द्रवंशी*

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) शास.जे.एम.पी. महाविद्यालय, तखतपुर, जिला-बिलासपुर (छ.ग.) भारत

शोध सारांश – किन्नर समाज मानव समाज की उत्पत्ति का अपवाद है। पुरूषों एवं स्त्रियों के बीच की स्थिति में निर्मित यह प्राणी मात्र है। इनका अपना अलग संसार है जो इनके द्वारा समाज की उपेक्षा एवं अपनों के तिरस्कार स्वरूप निर्मित एक अलग दुनिया है। ये अपने को अपनों से अलग नहीं करते अपितु अपने ही इन्हे तिरस्कृत कर घर से ही निकाल देते है। फलत ये किन्नर समाज द्वारा निर्मित प्रथम परम्परा में जाना ही समीचीन समझते है। अपनों का व्यवहार एवं समाज की भूमिका ने इनकी दशा और दिशा का दुर्गत किया है।

महेन्द्र भीष्म उपन्यास 'किन्नर कथा' में लिखते है कि 'लिंगोच्छेदन कर बनाए गए हिजड़ों की 'छिबरा' और नकली हिजड़ा बने मर्दो को 'अबुआ' कहते है ..... हिजड़ों की चार शाखाएँ होती है-बुचरा नीलिमा, मनुसा और हंसा। बुचरा जन्मजांत हिजड़ा होते हैं, नीलिमा स्वयं बने, मनसा स्वेच्छा से शामिल तथा हंसा शारीरिक कमी के कारण बने हिजडे है।'

किन्नरों की दशा एवं दिशा – परिवार एवं समाज की उपेक्षा के कारण इनकी दशा दयनीय एवं सोचनीय है ये मांगलिक अवसर पर नृत्य-गान करके एवं सार्वजनिक स्थलों पर भिक्षावृत्ति से जीविकोपार्जन चला रहे है। इन्हें देखकर आमजन एक कटु मुस्कुराहट देकर इनकी पीड़ा में आग में घी डालने का काम करते है। सामाजिक भेद भाव के कारण ही ये हमसे पृथक रहने को मजबूर हो जाते है। इनकी दयनीय दशा पर विचार करते हुए माननीय उच्चतम न्यायालय ने 15 अप्रैल 2014 को एक ऐतिहासिक फैसला दिया इन्हे समाज में तृतीय लिंग का दर्जा दिया गया है। समाज में इनका स्थान तय किया गया। शिक्षा का अधिकार अनिनियम 2009 के अंतर्गत ये भी नि:शुल्क शिक्षा के अधिकारी बन गये संसद ने सन् 2016 में किन्नरों के अधिकारों के संरक्षण हेतु 'ट्रांसजेंडर पर्सन बिल' को मंजूरी दी है।

किन्नर समुदाय तिलतिल करते हुए कैसे जीवन संघर्ष करते है उसका सप्रमाण उदा. नीरजा माधव कृत 'यमदीप' है। साहित्य में किन्नर विमर्श पर आधारित यमदीप के अलावा तीसरी ताली, किन्नर कथा, गुलाम मंडी, पोस्टर बाक्स नं. 203 नाला सोपारा प्रमुख उपन्यास है।

चित्रा मुदगल पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा में किन्नरों की दयनीयता का वर्णन करते हुए लिखती है, 'जननांग विकलांगता बहुत बड़ा दोष है लेकिन इनता बड़ा भी नहीं कि तुम मान लो कि तुम धड़ की मात्र वही निचला हिस्सा भर हो। .... तुम्हारे हाथ-पैर नहीं है, ... सब वैसा ही है जैसे औरों के हैं। यौन सुख लेने-देने से वंचित हो तुम, वात्सल्य सुख से नहीं।' तृतीय लिंग वर्ग सदियों से एक पीड़ा लिए समाज में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते आ रहे है। यदा-कदा उनकी उपयोगिता पुल्लिंग और स्त्रीलिंग धारकों से उत्कृष्ट है किन्तु सम्मान शून्य है। कन्या भ्रूण हत्या का तो कानूनी दण्ड प्रावधान है किन्तु जननांग दोष से उत्पन्न बच्चों का परित्याग करने को कही भी कोई समाजिक या कानूनी दण्ड देय नहीं है। चित्रा मुद्गल पोस्ट बॉक्स 203 में नाला सोपारा में लिखती है, 'कन्या भ्रूण हत्या के दोषी माता-पिता अपराधी हैं। उससे कम दंडनीय अपराध नहीं जननांग दोषी बच्चों को त्याग।'

हिजड़ा होना अपने आप ही भारी पीड़ा दायक अभिशाप है, इससे अधिक अपने परिवार द्वारा बार-बार अपमानित किया जाना ज्यादा ही कष्टकर है। महेन्द्र भीष्म 'किन्नर कथा' में इसी स्थिति का वर्णन करते हुए लिखते हैं, 'प्रत्येक किन्नर अभिशप्त है, अपने परिवार के बिछुडने के दंश से। समाज का पहला धात यहीं से शुरू होता है। अपने ही परिवार से अपने ही लोगों द्वारा उसे अपनों से दूर किया जाता है। परिवार से विस्थापन का दंश सर्व प्रथम उन्हें ही भुगतना पड़ता है।'

'गुलाम मंडी' में लेखिका निर्मला भुराड़िया किन्नरों के प्रति समाज के तिरस्कार से जुडे क़ई सवालों के जवाब तलाशने की कोशिश की है, किन्नर खुद अपनी व्यथा कहते है, 'हम ना, तुम्हारे जो शादी-ब्याह हो तो नाचेंगी-गाएँगी, शगुन पाएँगी मगर यूँ जो रास्ते में आ पडे ना हम, तो हिजड़ा कहकर धिक्कारोगी।'

शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार तो है किन्तु जेंडर की स्पष्टता न होने के कारण तृतीय लिंग को स्कूल में दाखिला लेने से कठिनाई होती है, तीसरी ताली उपन्यास की मंजू स्पष्ट कहती है 'हिजडे के बच्चे को कौन दाखिला देगा स्कूल में?' इस प्रकार लेखिका ने शैक्षणिक व्यवस्था पर किन्नरों की दायनीयता का प्रश्न उठाया है।

उपसंहार – किन्नर समुदाय जो संवेदना के पात्र है उन्हे यह समाज आज भी हाशिये में रखते हुए उपहास और तिरस्कार दे रहा है। यह वर्ग अपने लिए आवाज उठा तो रहा है किन्तु इनकी आवाज की यह कोशिश नक्कार खाने में तूती आवाज सिद्ध हो रही है किन्तु साहित्य जगत ने इनकी आवाज को समाज तक पहुँचाने का जो बीड़ा उठाया है वह सचमुच डूबते के लिए तिनके का सहारा बन गया है। साहित्य के माध्यम से समाज इस वर्ग को जानने लगा है इनके दुख, इनकी पीड़ा को समझने का यत्न हो रहा है।

अकेलेपन और जेंडर के अलावा बीच समाज में जीवन जीने की ललक तृतीय लिंग के संघर्ष को उजागर करता है। ये जीविकोपार्जन हेतु नृत्य, नाटक, भिक्षावृत्ति वेश्यावृत्ति जैसे राह पर चल पड़ते है इनके पीछे भी इनकी मजबूरी और समाज का अनदेखा पहलू है। हम इनसे सामाजिक दूरी बनाऐ तो ये क्या करेगें? आखिर इन्हे भी तो जीना है? जिसके लिए राह भटक जाते है, इन्हे सही मार्ग पर लाना हम सबका नैतिक जिम्मेदारी है। यदि किन्नर समाज गलत राह पर जा रहा है तो सही मार्ग पर लाने का दायित्व समूचे सभ्य समाज का है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. किन्नर कथा महेन्द्रभीष्म, अमन प्रकाशन 2011
2. यमदीप :- नीरजा माधव, सामयिक पेपर बैक : संस्करण 2021
3. तीसरी ताली : लेखक प्रदीप सौरभ : प्रकाशक वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011 पृष्ठ -31
4. पोस्ट बॉक्स नं. 203 नालासोपारा, चित्रा मुद्गल सामाजिक प्रकाशन नई दिल्ली 2016
5. गुलाम मंडी, निर्मला भुराडिया प्रकाशक सामयिक प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली
6. इंटरनेट।

****